

पद १८२

(रागः अनंदभैरवी तालः दीपचंदी)

वो लाशरीक अल्ला हर दिल जगा रहा है। माशूक इश्क आशिक
जल्वा दिखा रहा है॥ध्रु॥ क्या खूब है बहाना दुनिया में मर्दों
जनका। इश्के मजा खुदीका अल्लाह (खुद ही) लुटा रहा है॥१॥
मंदिर में बिरहमन मसजिद में अहले इस्लाम नाजो अदा से अपने
माशूक बना हुआ है॥२॥ आशिक हुआ जो मजनू लैला मे खुद
फना। तू हो फना खुदा मे देखो तो क्या मजा है॥३॥ ऐ बंदे शाह
अहमद मानीक चिराग दुनिया। रोशन है कुफरो इस्लाम अल्लाह
से क्या जुदा है॥४॥